IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समस्या समाधान क्षमता में विद्यालय वातावरण की भूमिका

[1]विनीता, शोधार्थिनी (शिक्षाशास्त्र), एम०बी०जी० पी०जी० कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

[2]डॉ० शुभ्रा पी० काण्डपाल, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, एम०बी०जी० पी०जी० कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

शोध सारांश – प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समस्या समाधान क्षमता में विद्यालय वातावरण की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। एल. दुबे द्वारा निर्मित समस्या समाधान क्षमता प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। ड़ॉ के0 एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में शोध जनसंख्या में से 100 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा चयन किया गया है। परिणामों से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय वातावरण के अनुज्ञापन आयाम तथा स्वीकृति आयामों में सार्थक अंतर पाया गया है। रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, अस्वीकृति आयाम, नियंत्रण आयामों में छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर नही पाया गया है।उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समस्या समाधान क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया है।उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, अनुज्ञापन आयाम, स्वीकृति मानदंड, अस्वीकृति आयाम, नियंत्रण आयामों तथा समस्या समाधान क्षमता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही पाया गया है।

कूट शब्द – समस्या समाधान क्षमता, विद्यालय वातावरण, उच्च माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना – उच्च माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा के लिए मार्ग प्रशस्त करती है यदि प्राथमिक शिक्षा ज्ञान प्राप्ति की आधारशिला है और उच्च शिक्षा ज्ञान का अंतिम लक्ष्य है तो उच्च माध्यमिक शिक्षा इन दोनों के मध्य की कड़ी है इस स्तर पर छात्र किशोरावस्था में होते हैं इस अवस्था में बालक अपने सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक तथा विद्यालय वातावरण से अधिक सीखता है। विद्यालय का वातावरण बालक के सीखने में सहायक होता है जिससे उसमें निरंतर उन्नति होती है विद्यालय का वातावरण बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है विद्यालय बच्चे का दूसरा घर होता है जिसमे बच्चे के सकारात्मक सीखने, मानसिक स्वास्थ्य, समस्या समाधान करने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी और अवसर है। विद्यालय का वातावरण बालक के सामाजिक मनोवैज्ञानिक विशेषताओं जैसे स्कूल के सदस्यों की साझा विचारधाराओं, मूल्यों, मानदंडों, विश्वासों, भावनाओं, विद्यालय के सदस्यों के व्यवहार, विद्यालय की संरचना और संचालन के लिए अपेक्षाओं का अध्ययन है। विद्यालय वातावरण बालक को सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं। विद्यालय वातावरण जितना अनुकूल होगा बालक का विकास उतना ही बेहतर होगा। विद्यालय वातावरण अच्छा होने से समस्या समाधान क्षमता भी अच्छी होती है। समस्या समाधान व्यवहार विद्यार्थियों को अपने सर्वांगीण विकास में उचित सहायता करता हुआ उचित संतुष्टि प्रदान कर सुख एवं संतोष की मंजिल तक ले जाता है या उसे समायोजित होने की दिशा में अधिक विवेकशील बनाने का प्रयत्न करता है। व्यक्तिगत कल्याण के अतिरिक्त समस्या समाधान क्षमता सामाजिक कल्याण और प्रगति की दिशा में भी विद्यार्थियों को बहुमूल्य सहयोग देगा। **बडोला, सुनीता (2013)** ने सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के कैरियर निर्माण परिपक्वता के संबंध में गृह और विद्यालय वातावरण के प्रभाव का पता लगाने का प्रयास किया। 800 सीनियर सेकेंडरी छात्रों का एक नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया।

मिश्रा द्वारा विकसित गृह वातावरण सूची और विद्यालय वातावरण सूची निर्मला गुप्ता द्वारा विकसित कैरियर निर्णय परिपक्वता सूची का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि गृह वातावरण के आयाम जैसे नियंत्रण, सुरक्षा, सामाजिक अलगाव, विशेष अधिकारों का अभाव उनके कैरियर निर्णय परिपक्वता पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न होते हैं जबकि विद्यालय वातावरण आयाम में अस्वीकृति का प्रभाव सीनियर सेकेंडरी छात्रों के कैरियर निर्णय परिपक्वता पर महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न होता है। **कुमार, एम० (2020)** ए स्टडी ऑफ प्रॉब्लम सॉल्विंग एबिलिटी एंड क्रिएटिविटी एमंग द हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स पर शोध कार्य किया। परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों के बीच रचनात्मकता का स्तर मध्यम है। उच्चतर माध्यमिक छात्रों के बीच रचनात्मकता और समस्या–समाधान क्षमता के बीच कोई संबंध नहीं है, समस्या–समाधान क्षमता के संबंध में लड़के और लड़कियों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है, और उनकी रचनात्मकता में उच्चतर माध्यमिक लड़के और लड़कियों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण के अंतर का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समस्या समाधान क्षमता के अंतर का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा समस्या समाधान क्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनॉए –

1. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समस्या समाधान क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा समस्या समाधान क्षमता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत समस्या के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या – प्रस्तुत शोध कार्य में नैनीताल जनपद के समस्त उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श – न्यादर्श के रूप में शोध जनसंख्या में से 100 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा चयन किया गया है।

शोध उपकरण – एल. दुबे द्वारा निर्मित समस्या समाधान क्षमता प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। डॉ॰ के0 एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण प्रपत्र का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी – आंकड़ों की व्याख्या हेतु टी टेस्ट, मध्यमान, पियर्सन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या 1

उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण के अंतर का अध्ययन

आयाम	वर्ग / विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी–मान	परिणाम
रचनात्मक उत्तेजना	छात्र	50	64.02	5.70	98	0.83	असार्थक
	छात्राएं	50	62.94	7.13			
संज्ञानात्मक प्रोत्साहन	छात्र	50	28.4	4.69	98	0.065	असार्थक
	छात्राएं	50	28.34	4.47			
अनुज्ञापन	छात्र	50	27.7	3.98	98	2.00	सार्थक
	छात्राएं	50	26	4.51			
स्वीकृति मानदंड	छात्र	50	27.56	3.74	98	2.91	सार्थक
	छात्राएं	50	24.76	5.67			
अस्वीकृति	छात्र	50	22.58	6.38	98	0.106	असार्थक
	छात्राएं	50	22.44	6.76			
नियंत्रण	छात्र	50	21.74	5.76	98	1.04	असार्थक
	छात्राएं	50	20.58	5.39			

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान –1.96

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान –2.58

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि विद्यालय वातावरण के अनुज्ञापन आयाम के अंतर्गत दोनों समूहो के मध्य टी–मान 2.00 तथा स्वीकृति आयाम के अंतर्गत दोनों समूहो के मध्य टी–मान 2.91 प्राप्त हुआ जो कि टी–तालिका के 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक है। इस आयाम में छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया है। **अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है।** रचनात्मक उत्तेजना आयाम के अंतर्गत दोनों समूहो के मध्य टी–मान 0.83 संज्ञानात्मक प्रोत्साहन आयाम के अंतर्गत दोनों समूहो के मध्य टी–मान 0.065 अस्वीकृति आयाम के अंतर्गत दोनों समूहो के मध्य टी–मान 0.106 नियंत्रण आयाम के अंतर्गत दोनों समूहो के मध्य टी–मान 1. 04 प्राप्त हुआ जो कि टी–तालिका के 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है। इस आयाम में छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। **अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त नही करते है।**

तालिका संख्या 2

उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समस्या समाधान क्षमता के अंतर का अध्ययन

चर	वर्ग / विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	df	परिणाम
समस्या समाधान क्षमता	छात्र	50	12.04	2.96	4.92	48	सार्थक
	छात्राएं	50	9.42	2.33			

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान –1.96

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान –2.58

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि समस्या समाधान क्षमता के अंतर्गत दोनो समूहों के मध्य टी मान 4.92 प्राप्त हुआ जो कि टी–तालिका के 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समस्या समाधान क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया है। **अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है।**

तालिका संख्या 3

उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा समस्या समाधान क्षमता के मध्य सार्थक सहसंबंध

चर	रचनात्मक उत्तेजना	संज्ञानात्मक प्रोत्साहन	अनुज्ञापन आयाम	स्वीकृति मानदंड	अस्वीकृति आयाम	नियंत्रण
समस्या समाधान क्षमता	0.132	–0.0015	0.143	0.085	0.005	0.002

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान – .195

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता अंश (df) 98 पर उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, अनुज्ञापन आयाम, स्वीकृति मानदंड, अस्वीकृति आयाम, नियंत्रण आयामों तथा समस्या समाधान क्षमता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही पाया गया है। **अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त नही करते है।**

निष्कर्ष –

- उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय वातावरण के अनुज्ञापन आयाम तथा स्वीकृति आयामों में सार्थक अंतर पाया गया है। रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, अस्वीकृति आयाम, नियंत्रण आयामों में छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय वातावरण में सार्थक अंतर नही पाया गया है।
- उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत छात्र–छात्राओं के समस्या समाधान क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया है।
- उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के रचनात्मक उत्तेजना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, अनुज्ञापन आयाम, स्वीकृति मानदंड, अस्वीकृति आयाम, नियंत्रण आयामों तथा समस्या समाधान क्षमता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ –

विद्यालय का वातावरण सकारात्मक बनाया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को सीखने की इच्छा, आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढावा मिलता है।

शांतिपूर्ण, सहयोगात्मक और अनुशासित वातावरण बनाया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में खुलकर विचार करने और चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रेरित करता है।

शिक्षकों को मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए, जिससे छात्रों की सोचने और समाधान खोजने की क्षमता को विकसित किया जा सके। केवल रटने पर नही बल्कि सोचने ,समझने विश्लेषण करने और समाधान खोजने की क्षमता को विकसित किया जा सके।

विद्यालय प्रशासन को ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें छात्र प्रश्न पूछ सके, गलतियॉ करे तथा उनसे सीख सके।

उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्र किशोरावस्था में होते है, इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न मानसिक तनाव तथा समस्याओं से होकर गुजरना पड़ता है। इस अवस्था में अभिभावकों को विद्यार्थियों को उचित सहयोग देना चाहिए जिससे उन्हे समस्याओं का समाधान करने में मदद मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Badola, Sunita (2013). A study of home environment and school environment of senior secondary school students of their decision maturity. *Journal of psychology*, Vol.*9*,179-183.
- Kumar, M. (2020). A study of problem solving ability and creativity among the higher secondary students. *International Journal of Education*, *8*(2), 30-34. DOI: https:// doi.org/10.34293/ educational.v8i2.2091.